

❖x°\*\* \*\*°x❖

# शिव तांडव स्तोत्रम् – मंत्र (Shiv Tandav Stotram) in Bangla

❖x°\*\* \*\*°x❖

## শিব তাংডব স্তোত্রম্

জটাটবীগলজ্জলপ্রবাহপাবিতস্থলে  
গলেবলংব্য লংবিতাং ভুজংগতুংগমালিকাম্ ।  
ডমডডমডডমডডমন্নিদাবডডমর্বষং  
চকার চংডতাংডবং তনোতু নঃ শিবঃ শিবম্ ॥ 1 ॥

জটাকটাহসংভ্রমভ্রমন্নিলিংপনির্বরী-  
-বিলোলবীচিবল্লরীবিরাজমানমূর্ধনি ।  
ধগদ্ধগদ্ধগজ্জ্বলল্লাটপট্টপাবকে  
কিশোরচংদ্রশেখরে রতিঃ প্রতিক্ষণং মম ॥ 2 ॥

ধরাধরেংদ্রনংদিনীবিলাসবংধুবংধুর  
স্ফুরদ্দিগংতসংততিপ্রমোদমানমানসে ।  
কৃপাকটাক্ষধোরণীনিকৃদ্ধদুর্ধরাপদি  
ক্ৰুচিদ্দিগংবরে মনো বিনোদমেতু বস্তুনি ॥ 3 ॥

জটাভুজংগপিংগলস্ফুরত্ফণামণিপ্রভা  
কদংবকুংকুমদ্রবপ্রলিপ্তদিগ্ধমুখে ।  
মদাংধসিংধুরস্ফুরত্বগুত্তরীযমেদুরে  
মনো বিনোদমদ্ভূতং বিভর্তু ভূতভর্তরি ॥ 4 ॥

সহস্রলোচনপ্রভৃত্যশেষলেখশেখর  
প্রসূনধূলিধোরণী বিধূসরাংঘ্রিপীঠভূঃ ।  
ভুজংগরাজমালয়া নিবদ্ধজাটজটক  
শ্রিযৈ চিরায জাযতাং চকোরবংধুশেখরঃ ॥ 5 ॥

ललाटचत्ररज्वलकनंजयस्फुलिंगभा-  
-निपीतपंचसायकं नमन्निलिंपनायकम् ।  
सुधामयूखलेखया विराजमानशेखरं  
महाकपालिसंपदेशिरोजटालमस्तु नः ॥ 6 ॥

करालफालपट्टिकाधगङ्गगङ्गगङ्गल-  
कनंजयाधरीकृतप्रचंडपंचसायके ।  
धराधरेन्द्रनंदिनीकुचाग्रचित्रपत्रक-  
-प्रकल्लनैकशिल्लिनि त्रिलोचने मतिर्मम ॥ 7 ॥

नवीनमेघमंडली निरुद्धदुर्धरस्फुरत्-  
कुहूनिशीथिनीतमः प्रबंधबंधुकंधरः ।  
निलिंपनिर्वरीधरस्तनोतु कृत्तिसिंधुरः  
कलानिधानबंधुरः श्रियं जगद्धुरंधरः ॥ 8 ॥

प्रफुल्लनीलपंकजप्रपंचकालिमप्रभा-  
-बिलंबिकंठकंदलीरुचिप्रवक्त्रकंधरम् ।  
स्मरच्छिदं पुरच्छिदं भवच्छिदं मथच्छिदं  
गजच्छिदांधकच्छिदं तमंतकच्छिदं भजे ॥ 9 ॥

अगर्वसर्वमंगलाकलाकदंबमंजरी  
रसप्रवाहमाधुरी विजृंभणामधुव्रतम् ।  
स्मरांतकं पुरांतकं भवांतकं मथांतकं  
गजांतकांधकांतकं तमंतकांतकं भजे ॥ 10 ॥

जयत्रदत्रवित्रमत्रमद्भुजंगमश्वस-  
-द्विनिर्गमत्क्रमस्फुरत्करालफालहव्याट् ।  
धिमिद्धिमिद्धिमिध्वनन्मदंगतुंगमंगल

ध्वनिक्रमप्रवर्तित प्रचंडतांडवः शिवः ॥ 11 ॥

दृषद्विचित्रतल्लयोर्भुजंगमौक्तिकस्रजोर्-  
-गरिष्ठरत्नलोष्ठयोः सुहाद्विपक्वपक्वयोः ।  
तृष्णारविंदचक्षुषोः प्रजामहीमहेन्द्रयोः  
समं प्रवर्तयन्नः कदा सदाशिवं भजे ॥ 12 ॥

कदा नलिंपनिर्बरीनिकुंजकोटरे वसन्  
विमुक्तदुर्मतिः सदा शिरःस्त्रमंजलिं वहन् ।  
विमुक्तलोललोचनो ललाटफललङ्कः  
शिवेति मंत्रमुच्चरन् सदा सुखी भवाम्यहम् ॥ 13 ॥

इमं हि नित्यमेवमुक्तमुत्तमोत्तमं स्ववं  
पठन्स्मरन्ब्रुवन्नरो विशुद्धिमेतिसंततम् ।  
हरे गुरौ सुभक्तिमाशु याति नान्यथा गतिं  
विमोहनं हि देहिनां सुशंकरस्य चिंतनम् ॥ 14 ॥

पूजावसानसमये दशवक्त्रगीतं यः  
शंभुपूजनपरं पठति प्रदोषे ।  
तस्य स्थिरां रथगजेन्द्रतुरंगयुक्तां  
लक्ष्मीं सदैव सुमुखिं प्रददाति शंभुः ॥ 15 ॥

इति श्री रावणकृतम शिव तान्दवस्तोत्रम सम्पूर्णम् ॥

✧x.....\* \* \* \* \*.....x✧